(अव्यक्त इशारे)
कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

1) शिव शक्ति का अर्थ ही है कम्बाइण्ड। बाप और आप - दोनों को मिलाकर कहते हैं शिवशक्ति। तो जो कम्बाइन्ड है, उसे कोई अलग नहीं कर सकता। यही याद रखो कि हम कम्बाइण्ड रहने के अधिकारी बन गये। पहले ढूँढने वाले थे और अभी साथ रहने वाले हैं - यह नशा सदा रहे।

2) जैसे ज्ञान स्वरूप हो ऐसे स्नेह स्वरूप बनो, ज्ञान और स्नेह दोनों कम्बाइन्ड हो क्योंकि ज्ञान बीज है, स्नेह पानी है। अगर बीज को पानी नहीं मिलेगा तो फल नहीं देगा। ज्ञान के साथ दिल का स्नेह है तो प्राप्ति का फल मिलेगा।

3) सदा हर कर्म करते हुए अपने को कर्मयोगी आत्मा अनुभव करो। कोई भी कर्म करते हुए याद भूल नहीं सकती। कर्म और योग - दोनों कम्बाइन्ड हो जाएं। जैसे कोई जुड़ी हुई चीज़ को अलग नहीं कर सकता, ऐसे कर्मयोगी बनो।

4) जैसे शरीर और आत्मा कम्बाइन्ड है तो जीवन है। यदि आत्मा शरीर से अलग हो जाए तो जीवन समाप्त हो जाता। ऐसे कर्मयोगी जीवन अर्थात् कर्म योग के बिना नहीं, योग कर्म के बिना नहीं। सदा कम्बाइन्ड हो तो सफलता मिलती रहेगी।

5) "बाबा और हम" – कम्बाइण्ड हैं, करावनहार बाबा और करने के निमित्त मैं आत्मा हूँ - इसको कहते हैं असोच अर्थात् एक की याद। शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जैसे बाप और आप कम्बाइण्ड हो, शरीर और आत्मा कम्बाइण्ड है, आपका भविष्य विष्णु स्वरूप कम्बाइण्ड है, ऐसे स्व-सेवा और सर्व की सेवा कम्बाइण्ड हो तब मेहनत कम सफलता ज्यादा मिलेगी।

6) कम्बाइण्ड सेवा के बिना सफलता असम्भव है। ऐसा नहीं कि जाओ सेवा करने और लौटो तो कहो माया आ गई, मूड ऑफ हो गया, डिस्टर्ब हो गये इसलिए अन्डरलाइन करो - सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है स्व की सेवा और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा।

7) सेवा और स्थिति, बाप और आप, यह कम्बाइन्ड स्थिति, कम्बाइन्ड सेवा करो तो सदा फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ भी हैं और साथी भी हैं - यह डबल अनुभव हो। स्व की लगन में सदा साथ का अनुभव करो और सेवा में सदा साथी का अनुभव करो।

8) जैसे ब्रह्मा बाप को देखा कि बाप के साथ स्वयं को सदा कम्बाइण्ड रूप में अनुभव किया और कराया। इस कम्बाइण्ड स्वरूप को कोई अलग कर नहीं सकता। ऐसे सपूत बच्चे सदा अपने को बाप के साथ कम्बाइण्ड अनुभव करते हैं। कोई ताकत नहीं जो उन्हें अलग कर सके।

9) बाप को कम्पेनियन तो बनाया है अब उसे कम्बाइण्ड रूप में अनुभव करो और इस अनुभव को बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृति-स्वरूप बन जाओ। बार-बार चेक करो कि कम्बाइण्ड हूँ, किनारा तो नहीं कर लिया? जितना कम्बाइण्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक अनुभव होगी।

10) बाप कम्बाइण्ड है इसलिए उमंग-उत्साह से बढ़ते चलो। कमजोरी, दिलशिकस्तपन बाप के हवाले कर दो, अपने पास नहीं रखो। अपने पास सिर्फ उमंग- उत्साह रखो। सदा उमंग- उत्साह में नाचते रहो, गाते रहो और ब्रह्मा भोजन करते रहो।

11) सदा स्मृति रखो कि कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके। प्यार की निशानी है कम्बाइण्ड रहना। यह आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाला है।

12) जितनी शक्तियों की शक्ति है उतनी ही पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। शक्तियां और पाण्डव इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप से ही विश्व सेवा के कार्य में सफलता प्राप्त होती है इसलिए सदा एक दो के सहयोगी बनकर रहो। जिम्मेवारी का ताज सदा पड़ा रहे।

13) जैसे इस समय आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है, ऐसे बाप और आप कम्बाइन्ड रहो। सिर्फ़ यह याद रखो कि 'मेरा बाबा'। अपने मस्तक पर सदा साथ का तिलक लगाओ। जो सुहाग होता है, साथ होता है वह कभी भूलता नहीं। तो साथी को सदा साथ रखो। अगर साथ रहेंगे तो साथ चलेंगे। साथ रहना है, साथ चलना है, हर सेकेण्ड, हर संकल्प में साथ है ही।

14) लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और हम कहते कि हम जो करते हैं, जहाँ जाते हैं बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है, ऐसे हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। करनहार और करावनहार दोनों कम्बाइण्ड हैं।

15) जिसके साथ स्वयं सर्वशक्तिमान् बाप कम्बाइण्ड है, सर्व शक्तियां स्वतः उनके साथ होंगी। जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। कोई अच्छा साथी लौकिक में भी मिल जाता है तो उसको छोड़ नहीं सकते। ये तो अविनाशी साथी है। कभी धोखा देने वाला साथी नहीं है। सदा ही साथ निभाने वाला साथी है, सदा साथ-साथ रहो।

16) कभी कोई कार्य में या सेवा में जब अकेले अनुभव करते हो तब थक जाते हो। फिर दो भुजा वालों को साथी बना लेते हो, हजार भुजा वाले को भूल जाते हो। जब हजार भुजा वाला अपना परमधाम घर छोड़कर आपको साथ देने के लिए आया है तो उसे अपने साथ कम्बाइण्ड क्यों नहीं रखते! सदा बुद्धि से कम्बाइण्ड रहो तो सहयोग मिलता रहेगा।

17) संगमयुग पर ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइण्ड पन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही नहीं, साथ प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी। सिर्फ घबराओ नहीं, क्या हो गया ! हिम्मत रखो, बाप के साथ को स्मृति में रखो तो विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

18) सदा यही स्मृति रहे कि मैं रूह उस सुप्रीम रूह के साथ कम्बाइन्ड हूँ। सुप्रीम रूह मुझ रूह के बिना रह नहीं सकते और मैं भी सुप्रीम रूह के बिना अलग नहीं हो सकता। ऐसे हर सेकेण्ड हजूर को हाजिर अनुभव करने से रूहानी खुशबू में अविनाशी और एकरस रहेंगे।

19) मुझ रूह का करावनहार वह सुप्रीम रूह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित्त करने वाला हूँ। मैं करनहार वह करावनहार है। वह चला रहा है, मैं चल रहा हूँ। हर डायरेक्शन पर मुझ रूह के लिए संकल्प, बोल और कर्म में सदा हज़ूर हाज़िर है इसलिए हज़ूर के आगे सदा मैं रूह भी हाज़िर हूँ। सदा इसी कम्बाइन्ड रूप में रहो।

20) मैं और मेरा बाबा, इसी स्मृति में कम्बाइन्ड रहो तो मायाजीत बन जायेंगे। करन-करावनहार - इस शब्द में बाप और बच्चे दोनों कम्बाइन्ड हैं। हाथ बच्चों का और काम बाप का। हाथ बढ़ाने का गोल्डन चांस बच्चों को ही मिलता है। लेकिन अनुभव होता है कि कराने वाला करा रहा है। निमित्त बनाए चला रहा है - यही आवाज सदा मन से निकलता है।

21) जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आये तो यही स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड हूँ, तो घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अपने सब बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं हल्के हो जाओ तो सदा अपने को खुशनसीब अनुभव करेंगे और फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे।

22) संगमयुग है ही कम्बाइन्ड रहने का युग। बाप से अकेले हो नहीं सकते। सदा के साथी हो। सदा बाप के साथ रहना अर्थात् सदा सन्तुष्ट रहना। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हो तो कम्बाइन्ड की शक्ति बहुत बड़ी है, एक कार्य के बजाए हजार कार्य कर सकते हो क्योंकि हजार भुजाओं वाला बाप आपके साथ है।

23) जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म कर रही है, आपका टाइटल ही है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे। नॉलेजफुल के साथ-साथ पावरफुल स्टेज पर रहो। नॉलेजफुल और पावरफुल यह दोनों स्टेज कम्बाइन्ड हों तब स्थापना का कार्य तीव्रगति से होगा।

24) अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से

जुदा नहीं करो। जब नाम है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग क्यों करते हो। सदा अपना यह नाम याद रखो तो सेवा में स्वतः ही खुदाई जादू भर जायेगा।

25) सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा के प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ यही होता है, जो स्वयं को सिर्फ सेवाधारी समझते हो लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी हूँ, सिर्फ सर्विस पर नहीं लेकिन गॉडली सर्विस पर हूँ - इसी स्मृति से याद और सेवा स्वत: ही कम्बाइन्ड हो जाती है।

26) जैसे शिव-शक्ति कम्बाइन्ड रूप है ऐसे पाण्डवपति और पाण्डव यह सदा का कम्बाइन्ड रूप है। पाण्डवपति पाण्डवों के सिवाए कुछ नहीं कर सकते। जो ऐसे कम्बाइन्ड रूप में सदा रहते हैं उनके आगे बापदादा साकार में जैसे सब सम्बन्धों से सामने होते हैं। जहाँ बुलाओ वहाँ सेकण्ड में हाज़िर इसलिए कहते हैं हाज़िरा हज़ूर।

27) वरदाता बाप और हम वरदानी आत्मायें दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह स्मृति सदा रहे तो पवित्रता की छत्रछाया स्वतः रहेगी क्योंकि जहां सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो, सिंगल नहीं। सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

28) आपके शिव शक्ति के कम्बाइन्ड रूप का यादगार सदा पूजा जाता है। शक्ति शिव से अलग नहीं, शिव शक्ति से अलग नहीं। ऐसे कम्बाइन्ड रूप में रहो, इसी स्वरूप को ही सहजयोगी कहा जाता है। योग लगाने वाले नहीं लेकिन सदा कम्बाइन्ड अर्थात् साथ रहने वाले। जो वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ जियेंगे, साथ चलेंगे..... यह वायदा पक्का याद रखो।

29) स्वयं को बाप के साथ कम्बाइन्ड समझने से विनाशी साथी बनाने का संकल्प समाप्त हो जायेगा क्योंकि सर्वशक्तिमान साथी है। जैसे सूर्य के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता वैसे सर्वशक्तिमान के आगे माया का कोई भी व्यर्थ संकल्प भी ठहर नहीं सकता। कोई भी दुश्मन वार करने के पहले अकेला बनाता है, इसलिए कभी अकेले नहीं बनो।

30) "आप और बाप" - इस कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करते, सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव करो तो सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। सदा एक स्लोगान याद रखना – "न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे, स्वयं भी समाधान स्वरूप रहेंगे और दूसरों को भी समाधान देंगे।" यह स्मृति सफलता स्वरूप बना देगी।